आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 26 March, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – " आज से बल्कि अभी से इस पुरूषार्थ में जुट जाये, संसार में कोई कुछ भी कहे, मुझे अपनी उमंग उत्साह को बरकरार रखना है "

जीवन में खुशी और उमंग उत्साह सदा ही कायम रहे इसका बड़ा महत्व होता है। जिसके जीवन में कोई उमंग उत्साह न हो उसका जीवन तो नीरस हो जाता है।

उमंग उत्साह तो वास्तव में हमारा पंख है, जिनके द्वारा हम खुशी में उड़ते रहते है। उमंग उत्साह हमारे ब्राह्मण जीवन की श्वांस है। जिससे हम जीने का सुख लेते है।

तो हम अपने **जीवन को उमंग उत्साह से भरपूर करे।** हम ब्राह्मणों के लिए यह बहुत सहज है। क्योंकि बाबा ने एक महान लक्ष्य दे दिया है।

दुनिया में भी जब किसी के सामने कोई लक्ष्य होता है, कोई बड़ा कार्य होता है। उसको करने की एक **समय** सीमा होती है। तो कितना मन में उमंग उत्साह रहता है। और उस उमंग उत्साह के कारण मन और अनेक व्यर्थ बातों से मुक्त रहता है।

हमें भी बाबा ने बहुत महान लक्ष्य दिया है। सम्पूर्ण बनना है, **कर्मातीत** होना है। **बाबा से सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करने है।** अपनी झोली सर्व खजानों से भरनी है।

बाबा ने हमें सबकुछ देने आया है। उससे हमें सबकुछ ले लेना है। यह हमारे लक्ष्य है।

विचार करे, क्या सचमुच हमने अपने जीवन का कोई महान लक्ष्य बनाया है? अवश्य बना ले। तीन तीन मास का लक्ष्य बना ले। बहुत अच्छी अनुभूति होगी।

छोटा सा लक्ष्य बना ले, तीन तीन प्वाइंट का। एक प्वाइंट धारणा का रख ले .... " **तीन मास में मुझे जीवन में यह धारणा ले आनी है।** "

दो चार स्वमान रख ले .... " इनका मुझे अभ्यास करना है। " **अपने योग के चार्ट रखने का लक्ष्य बना ले** .... " तीन मास में मुझे रोज दो घन्टे का योग करना है या चार घन्टे योग करना है, या इससे ज्यादा योग करना है। "

यह लक्ष्य हमें बहुत महान बना देते है। ऐसे ही हमारा लक्ष्य है .... " **हमें संसार को दुःखों से मुक्त करना है। हमें आगे चलके बड़े बड़े कार्य करने है।** "

तो एक उमंग साथ में लेकर हम हमेशा चले .... " **मुझे यह करना है।** " कभी भी जीवन में ढिलाई न आये।

चेक कर ले अपने को। एक दृष्टि अपने जीवन पर अवश्य डाले। हम संगम युग के यह दिन कैसे बिता रहे है? उमंग उत्साह में या कनफ्युशन में? व्यर्थ संकल्पों में या छोटी मोटी बेकार बातों की चक्करों में?

हमें यह जीवन ईश्वरीय सुखों में बिताना है। तो एक उमंग ले ले ... " **वाह् , मुझे तो बाबा से सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त कर लेना है।** और इस भाग्य को प्राप्त करने में मुझे कोई रोक भी नहीं सकेगा। "

जब मनुष्य के मन में बहुत सारा उमंग उत्साह होता है, जिसको ही दुसरे शब्दों में कहते है .... जब कोई लगन होती है, तो उस लगन की अगन में सभी विघ्न जलकर नष्ट हो जाते है।

जहाँ मनुष्य के जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है वही मनुष्य को धराशायी कर देते है। वहीं विघ्न उसके ऊपर हावी होकर रहते है। उसका जीवन विघ्नमय हो जाता है।

लेकिन जहाँ **लगन की अग्नि तेज प्रज्वलित है**, उसमें ही हम लगे हुए है, विघ्न की ओर हमारा ध्यान ही नहीं है .... " कौन क्या कह रहा है, इसकी हमें चिन्ता ही नहीं है, हम तो अपने महान लक्ष्य को पाने में लगे हुए है। "

तो विघ्न और विघ्न की स्थिति में रहते ही नहीं। उनका आभास हमें होता ही नहीं। तो हम अपने महान लक्ष्य की ओर चले। संसार क्या कहते है, लोग क्या कहते है इसकी चिंता न करे। तो जीवन उमंग उत्साह से सदा भरपूर रहेगा।

तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे ... **" घर जाने का और वापिस इस देह में आने का। "**

अभ्यास करे ... " यह संसार का **चुराशी जन्मों का खेल** अब पूरा होता है। अब यह देह छोड़कर मैं आत्मा उड़ चली अपने धाम। और उड़ते उड़ते पहुँच गई **परमधाम** में, बाबा के पास। और वहाँ से (कुछ देर वहाँ रहकर) मैं आत्मा वापिस उतरी। और नीचे आ गई पुनः अपने देह में। "

अशरीरीपन का बहुत सुन्दर अनुभव होगा।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org